



शनि गोचर रिपोर्ट

शनि के भ्रमण का आपके भावों, कर्म व जीवन पर विस्तृत प्रभाव

श्री अभय शर्मा (काल्पनिक) जी हेतु व्यक्तिगत रिपोर्ट

नाम	अभय शर्मा (काल्पनिक)
जन्म तिथि व समय	12 जुलाई 1992 • 09:45
जन्म स्थान	जयपुर
लग्न • राशि • नक्षत्र	सिंह • वृश्चिक • ज्येष्ठा
वर्तमान दशा	सूर्य महादशा (2023–2029)
रिपोर्ट तिथि	24 सितम्बर 2026 • प्रातः 8:02

॥ पारस वाणी ॥

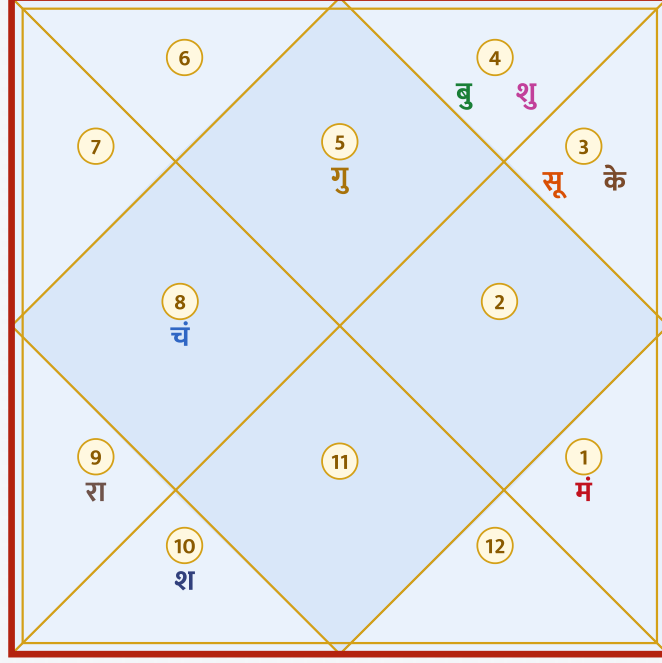
parasvani • वैदिक ज्ञान, आधुनिक तकनीक

यह रिपोर्ट खगोलीय Swiss Ephemeris (लाहिरी अयनांश) गणना पर आधारित है



जन्म कुंडली — ग्रह स्थिति एवं प्रभाव

कुंडली परिचय



जन्म-कुंडली (उत्तर भारतीय पद्धति) · लाहिरी अयनांश

ग्रह	राशि	भाव	क्षेत्र-प्रभाव
सूर्य	मिथुन	11	आत्मबल व प्रतिष्ठा — लाभ व आय
चंद्र	वृश्चिक	4	मन व भावनाएँ — सुख व माता
मंगल	मेष	9	ऊर्जा व साहस — भाग्य व धर्म
बुध	कर्क	12	बुद्धि व व्यापार — व्यय व अध्यात्म
गुरु	सिंह	1	ज्ञान व भाग्य — व्यक्तित्व व स्वास्थ्य
शुक्र	कर्क	12	सुख व कला — व्यय व अध्यात्म
शनि (वक्री)	मकर	6	कर्म व अनुशासन — सेवा व प्रतिस्पर्धा
राहु (वक्री)	धनु	5	महत्वाकांक्षा व नवाचार — बुद्धि व संतान
केतु (वक्री)	मिथुन	11	अध्यात्म व मोक्ष — लाभ व आय

विंशोत्तरी दशा — अंतर्दशा तालिकाएँ

अ भी च ल र ही व अ ग ली म हा द शा • वर्तमान ◀ चिह्न से

सूर्य महादशा ◀

19/04/2023 – 19/04/2029

अंतर्दशा	से	तक
सूर्य	19/04/2023	07/08/2023
चंद्र	07/08/2023	06/02/2024
मंगल	06/02/2024	12/06/2024
राहु	12/06/2024	07/05/2025
गुरु	07/05/2025	23/02/2026
शनि ◀	23/02/2026	05/02/2027
बुध	05/02/2027	13/12/2027
केतु	13/12/2027	19/04/2028
शुक्र	19/04/2028	19/04/2029

चंद्र महादशा

19/04/2029 – 19/04/2039

अंतर्दशा	से	तक
चंद्र	19/04/2029	17/02/2030
मंगल	17/02/2030	18/09/2030
राहु	18/09/2030	19/03/2032
गुरु	19/03/2032	19/07/2033
शनि	19/07/2033	17/02/2035
बुध	17/02/2035	19/07/2036
केतु	19/07/2036	17/02/2037
शुक्र	17/02/2037	19/10/2038
सूर्य	19/10/2038	19/04/2039

योगिनी दशा — अंतर-योगिनी तालिकाएँ

अ भी च ल र ही व अ ग ली यो गि नी • वर्तमान ◀ चिह्न से

भद्रिका योगिनी ◀

स्वामी बुध • 5 वर्ष • 20/08/2024 – 20/08/2029

अंतर-योगिनी	से	तक
भद्रिका	20/08/2024	01/05/2025
उल्का	01/05/2025	01/03/2026
सिद्धा ◀	01/03/2026	19/02/2027
संकटा	19/02/2027	31/03/2028
मंगला	31/03/2028	21/05/2028
पिंगला	21/05/2028	30/08/2028
धान्या	30/08/2028	30/01/2029
भ्रामरी	30/01/2029	20/08/2029

उल्का योगिनी

स्वामी शनि • 6 वर्ष • 20/08/2029 – 21/08/2035

अंतर-योगिनी	से	तक
उल्का	20/08/2029	21/08/2030
सिद्धा	21/08/2030	21/10/2031
संकटा	21/10/2031	19/02/2033
मंगला	19/02/2033	21/04/2033
पिंगला	21/04/2033	20/08/2033
धान्या	20/08/2033	19/02/2034
भ्रामरी	19/02/2034	21/10/2034
भद्रिका	21/10/2034	21/08/2035



शनि गोचर — परिचय व आपकी कुंडली में शनि

अ ध्या य 1

शनि गोचर — परिचय व आपकी कुंडली में शनि

अभय शर्मा जी, शनि को समझना है तो पहले यह मन में बैठा लीजिए — शनि दंड देने वाला ग्रह नहीं, **न्याय करने वाला है**। वह वही लौटाता है जो आपने बोया है — धैर्य से, देरी से, पर पूरी ईमानदारी से। और आपकी कुंडली में शनि की स्थिति यही कहानी बड़े साफ़ शब्दों में कहती है।

आपकी कुंडली में जन्म-शनि — एक असाधारण स्थिति

आपकी जन्म-कुंडली में **शनि मकर राशि के छठे भाव में स्वराशि में विराजमान हैं — और वक्री भी हैं**। यह संयोग साधारण नहीं है।

शनि का छठे भाव में स्वराशि में होना शास्त्र में **हर्ष विपरीत राजयोग** बनाता है — अर्थात् कठिनाइयाँ, शत्रु, रोग और ऋण के मामलों में अंततः आप ही विजयी होते हैं। छठा भाव संघर्ष का भाव है, और उसी भाव में शनि अपने घर में बैठे हों तो संघर्ष ज़रूर आता है — पर हारते नहीं आप। षड्बल में शनि का बल 7.5 रूप है, जो न्यूनतम अपेक्षित 5 से काफ़ी ऊपर है, इसलिए यह योग बल के साथ काम करता है। **हाँ, अवस्था कुमार है — इसका अर्थ है कि फल पूरा नहीं, आधा मिलता है, धीरे-धीरे पकता है**। जल्दबाज़ी शनि को नापसंद है।

वक्री शनि का एक और गुण है — वे भीतर से बहुत गहरे चलते हैं। जो काम बाहर से दिखता नहीं, वह भीतर पक रहा होता है। आपके जीवन में कई बार ऐसा हुआ होगा कि वर्षों की मेहनत एक दिन अचानक फल देती दिखी — यही वक्री शनि का ढंग है।

शनि की दृष्टि — आपकी कुंडली में कहाँ पड़ रही है

जन्म-शनि अपनी विशेष दृष्टियों से **भाव 8, भाव 12 और भाव 3** को देख रहे हैं।

- **भाव 8 पर दृष्टि** — आयु, गूढ़ विद्या और अचानक परिवर्तनों पर शनि की नज़र रहती है। यह दृष्टि जीवन में अनावश्यक जोखिम से बचाती है।
- **भाव 12 पर दृष्टि** — व्यय और एकांत के भाव पर शनि की दृष्टि एक अनुशासन लाती है — आप फ़िज़ूलखर्ची से स्वाभाविक रूप से बचते हैं।
- **भाव 3 पर दृष्टि** — पराक्रम और साहस के भाव पर शनि की दृष्टि यह कहती है कि आपका साहस सोच-समझकर उठाया गया क़दम है, आवेश में नहीं।

गोचर शनि — अभी कहाँ हैं और क्या कह रहे हैं

आज 14 सितम्बर 2026 को गोचर शनि मीन राशि के 18° पर रेवती नक्षत्र में हैं — और वक्री चल रहे हैं। वे 11 दिसम्बर 2026 को मार्गी होंगे और 3 जून 2027 तक मीन में रहेंगे।

आपकी सिंह लग्न से गिनें तो गोचर शनि आपके आठवें भाव में हैं। चंद्र राशि वृश्चिक से गिनें तो पाँचवें भाव में। इस दोहरी स्थिति को समझना जरूरी है।

अष्टकवर्ग में भाव 8 (मीन) के शोधित बिंदु 5 हैं — न बहुत कम, न बहुत अधिक। इसका अर्थ है कि गोचर शनि का फल यहाँ मध्यम तीव्रता का है।

जन्म-शनि मकर में हैं और गोचर-शनि मीन में — यह जन्म-शनि से तीसरा स्थान है। शास्त्र में तृतीय गोचर शनि को मध्यम फलदायी माना गया है — न अत्यंत शुभ, न अत्यंत कठिन।

साढ़े साती की जाँच करें तो आपकी चंद्र राशि वृश्चिक से शनि अभी पाँचवें भाव में हैं — न साढ़े साती है, न ढैया। यह राहत की बात है।

मुख्य बातें

- जन्म-शनि छठे भाव में स्वराशि में हैं — हर्ष विपरीत राजयोग देते हैं; संघर्ष के बाद विजय आपकी नियति है
- वक्री जन्म-शनि भीतरी गहराई और धैर्य से काम करने की प्रवृत्ति देते हैं — परिणाम देर से आता है पर टिकाऊ होता है
- गोचर शनि अभी मीन में वक्री हैं, लग्न से आठवें भाव में; 11 दिसम्बर 2026 को मार्गी होंगे — तब स्थिरता बढ़ेगी
- साढ़े साती या ढैया नहीं — चंद्र राशि से शनि पाँचवें भाव में हैं, इसलिए वह विशेष दबाव अभी नहीं
- शनि का बल ठीक-ठाक है पर कुमार अवस्था में है — फल आधा और क्रमिक, एक बार में पूरा नहीं



वर्तमान शनि गोचर — किस भाव में, क्या दे रहे हैं

अध्याय 2

वर्तमान शनि गोचर — किस भाव में, क्या दे रहे हैं

अभय शर्मा जी, आज गोचर में शनि मीन राशि के 18° पर विराजमान हैं — और यह राशि आपके जन्म-लग्न सिंह से आठवाँ भाव है। यह स्थिति न हल्की है, न डराने वाली — यह वह दौर है जिसमें ज़िंदगी आपको भीतर से पकाती है, बाहर से चमकाती नहीं। पर जो इसे समझकर चले, उसे यही दौर सबसे गहरी परिपक्वता देता है।

शनि आठवें भाव में — भीतर का काम

आठवाँ भाव छिपी हुई चीजों का घर है — गहरे परिवर्तन, अचानक बदलाव, पुराने ढाँचे का टूटना, और उसके भीतर से नए रूप का जन्म।

गोचर शनि यहाँ वक्री हैं (मार्गी दिसम्बर 2026 में होंगे), यानी उनका काम अभी अंदर की ओर है — बाहर दिखने वाले परिणाम इस समय नहीं, पर भीतर की जड़ें हिल रही हैं।

शनि का स्वभाव है धीमा और गहरा। आठवें भाव में वे जो प्रश्न उठाते हैं, वे ऐसे होते हैं — *जो काम मैं वर्षों से कर रहा हूँ, क्या वह सचमुच मेरा है? जो बोझ उठाए हुए हूँ, क्या वह जरूरी है? जो रिश्ते या साझेदारियाँ हैं, क्या उनमें पारदर्शिता है?* ये प्रश्न असुविधाजनक होते हैं — पर यही शनि का असली उपहार है।

आपकी कुंडली में **आठवें भाव के स्वामी गुरु हैं, जो लग्न में बैठे हैं और युवा अवस्था में, पूरे बल के साथ।** यह एक महत्वपूर्ण संरक्षण है। गोचर शनि जो भी दबाव डाल रहे हैं, उसे आपकी बुद्धि और आत्मशक्ति संभालने में सक्षम है — टूटना नहीं, पचाना है।

चंद्र राशि से पाँचवाँ भाव — मन और बुद्धि पर असर

आपकी चंद्र राशि वृश्चिक है। वहाँ से गिनें तो गोचर शनि **पाँचवें भाव में हैं** — संतान, बुद्धि, रचनात्मकता और भावनात्मक सुख का क्षेत्र। **साढ़े साती या ढैया का कोई दबाव नहीं है** — यह राहत की बात है।

पर पाँचवाँ भाव मन की उमंग का घर भी है। शनि यहाँ थोड़ी गंभीरता ला देते हैं — कभी-कभी मन लगता है कि जो काम करते हैं उसमें पहले जैसा आनंद नहीं रहा, या कोई निर्णय लेने में देरी हो रही है। 34 वर्ष की आयु में यह स्वाभाविक है कि मन अब खेलने के बजाय जड़ें जमाने की सोचता है — और शनि यही करवा रहे हैं।

शनि की दृष्टियाँ — तीन क्षेत्र जहाँ असर दिख रहा है

गोचर शनि मीन से अपनी तीन दृष्टियाँ डाल रहे हैं — **दसवें, बारहवें और पाँचवें भाव पर** (लग्न से गिनकर)।

- **दसवाँ भाव (कर्म-यश):** यहाँ शनि की सातवीं दृष्टि पड़ रही है। दशमांश (D10) में भी देखें तो गुरु बारहवें भाव में हैं — करियर में कुछ अदृश्य उलझन या भीतरी थकान इस समय महसूस हो सकती है। **मेहनत का फल तत्काल नहीं दिखेगा, पर नींव रखी जा रही है।** इस समय जो काम चुपचाप किया जाएगा, वह फरवरी 2027 के बाद रंग लाएगा जब शनि मार्गी होंगे और अंतर्दशा बुध की आएगी।

- **बारहवाँ भाव (व्यय-एकांत):** यहाँ शनि की दसवीं दृष्टि है, और इसी भाव में आपके जन्म के बुध व शुक्र बैठे हैं। **धन पर अनावश्यक दबाव या अदृश्य व्यय** इस समय संभव है। किसी भी बड़े वित्तीय निर्णय में जल्दबाजी न करें — विशेषकर अक्टूबर 2026 के बाद जब बुध भी वक्री होंगे।

- **पाँचवाँ भाव:** जैसा ऊपर देखा — मन की रचनात्मकता और संतान-विषय पर हल्का दबाव।

जन्म-शनि से संबंध — यह गोचर कितना गहरा है

आपके जन्म-शनि मकर राशि में स्वराशि में हैं — **छठे भाव में, वक्री**। गोचर शनि अभी मीन में हैं — यह जन्म-शनि से **तीसरा भाव** है। यह "शश पंचमहापुरुष योग" जैसी स्थिति नहीं, पर जन्म-शनि की स्वराशि का बल यह बताता है कि आपमें शनि का अनुशासन और सहनशक्ति पहले से है। **गोचर-शनि का यह दौर आपको कमज़ोर नहीं करेगा — वह आपकी उसी क्षमता की परीक्षा ले रहा है।**

इसके अलावा, **हर्ष विपरीत राजयोग** आपकी कुंडली में है — छठे भाव का स्वामी (शनि) दुस्स्थान में बैठा है, और यही शनि के गोचर को एक छुपी शक्ति देता है। कठिनाई के पार अप्रत्याशित उन्नति — यह इस योग का वादा है।

मुख्य बातें

- **गोचर शनि लग्न से आठवें भाव में वक्री हैं** — यह भीतरी परिवर्तन का समय है, बाहरी उपलब्धि का नहीं; दिसम्बर 2026 में मार्गी होने पर स्थिति स्पष्ट होगी।
- **चंद्र राशि से पाँचवें भाव में शनि** — साढ़े साती-ढैया नहीं, पर मन में गंभीरता व कुछ थकान स्वाभाविक है।
- **दसवें भाव पर शनि की दृष्टि** — करियर में मेहनत का फल देर से आएगा; फ़रवरी 2027 के बाद बेहतर दिखेगा।
- **बारहवें भाव पर दृष्टि** — बड़े व्यय या वित्तीय निर्णयों में सावधानी, विशेषकर अक्टूबर-दिसम्बर 2026 तक।
- **जन्म-शनि का बल और हर्ष योग** — यह दौर टूटने का नहीं, सधने का है; जो धैर्य से टिका रहेगा, उसके लिए यही समय नींव बनेगा।



शनि की दृष्टियाँ (तृतीय · सप्तम · दशम) व उनका फल

अ ध्या य 3

शनि की दृष्टियाँ (तृतीय · सप्तम · दशम) व उनका फल

अभय शर्मा जी, शनि केवल जहाँ बैठे हैं वहीं काम नहीं करते — **उनकी तीन विशेष दृष्टियाँ (3, 7 और 10वीं) तीन अलग-अलग दरवाज़ों पर एक साथ दस्तक देती हैं।** इस समय गोचर शनि मीन राशि में, आपके जन्म-लग्न सिंह से आठवें भाव में वक्री होकर बैठे हैं — और इनकी तीन दृष्टियाँ आपके दसवें, दूसरे और पाँचवें भाव पर पड़ रही हैं। हर दृष्टि का फल अलग है, और हर एक आपकी ज़िंदगी के किसी न किसी महत्वपूर्ण हिस्से को छू रही है।

तृतीय दृष्टि — वृषभ (दसवाँ भाव) पर: काम और यश का दबाव

गोचर शनि की तृतीय दृष्टि आपके दसवें भाव (वृषभ) पर पड़ रही है — यह करियर, नौकरी और प्रतिष्ठा का भाव है। शनि न्याय का

ग्रह हैं और दसवाँ भाव कर्म का — जब ये दोनों मिलते हैं तो एक ही सन्देश आता है: जो काम ईमानदारी से और धैर्य से किया है, वह टिकेगा; जो शॉर्टकट से या दिखावे से किया है, वह यहाँ कमज़ोर पड़ेगा।

दशमांश (D10) में आपके दसवें भाव में गुरु और राहु मकर राशि में हैं — यह संयोजन बड़े सपनों और बड़ी ज़िम्मेदारियों का है, पर शनि की दृष्टि यहाँ यही कहती है कि **अभी दिखावे से नहीं, असली काम से पहचान बनेगी।** अष्टकवर्ग में दसवें भाव के शोधित बिंदु केवल 3 हैं — यह कम है, यानी इस समय यश या पदोन्नति सहज नहीं मिलेगी, पर जो मिलेगी वह स्थायी होगी। **फ़रवरी 2027 के बाद, जब सूर्य-बुध अंतर्दशा आएगी, तब करियर में कुछ हल्कापन आना शुरू होगा।** तब तक यह शनि की दृष्टि एक कसौटी की तरह है — टिके रहिए।

सप्तम दृष्टि — कर्क (बारहवाँ भाव) पर: मन, एकांत और ख़र्च

गोचर शनि की सप्तम दृष्टि आपके बारहवें भाव (कर्क) पर पड़ रही है। यह भाव व्यय, एकांत, नींद और मन के भीतर चलने वाली हलचल का भाव है। आपकी जन्म-कुंडली में इसी बारहवें भाव में बुध और शुक्र बैठे हैं — दोनों शत्रु राशि में, शुक्र अस्त भी हैं।

शनि की यह दृष्टि उस पहले से ही संवेदनशील भाव पर और ज़ोर डाल रही है। इसका मतलब यह है कि इन दिनों मन कभी-कभी थका हुआ, अकेला या भीतर से उलझा हुआ महसूस कर सकता है। **खर्चे अनायास बढ़ सकते हैं, नींद अनियमित हो सकती है, और मन में पुरानी बातें घूम सकती हैं।** यह कमज़ोरी नहीं — शनि यहाँ यह कहते हैं कि जो भीतर से नहीं सुलझाया, वह अब ध्यान माँग रहा है।

चंद्र कुंडली से देखें तो गोचर गुरु अभी आपकी चंद्र राशि से नवें भाव में हैं — यह एक बड़ा सहारा है। इससे मन को गहरे में एक स्थिरता मिल रही है, भले ही ऊपर से सब उथल-पुथल लगे। **रोज़ थोड़ी देर का एकांत और मौन — चाहे दस मिनट ही सही — इस शनि-दृष्टि के साथ तालमेल बैठाने का सबसे असरदार तरीका है।** केतु ध्यान के ग्रह हैं और आपकी कुंडली में ग्यारहवें भाव में बैठे हैं — यह दर्शाता है कि एकांत में बैठकर मन को स्थिर करना आपके स्वभाव में पहले से है।

दशम दृष्टि — मिथुन (ग्यारहवाँ भाव) पर: लाभ और आशाओं का धैर्य-परीक्षण

गोचर शनि की दशम दृष्टि आपके ग्यारहवें भाव (मिथुन) पर पड़ रही है — यह लाभ, आय, इच्छापूर्ति और बड़े सपनों का भाव है। इसी भाव में आपके जन्म में सूर्य और केतु बैठे हैं। ग्यारहवें भाव के अष्टकवर्ग में शोधित बिंदु केवल 3 हैं — यानी लाभ के रास्ते इस समय खुले नहीं, बंद-से लग रहे हैं।

शनि की यह दृष्टि कहती है: **जो चाहते हैं वह मिलेगा, पर अभी नहीं — और बिना मेहनत के तो बिल्कुल नहीं।** इस समय बड़े सपनों को छोटे-छोटे क़दमों में बाँटना ही शनि का तरीका है। जो लोग इस दृष्टि में धैर्य रखते हैं, उन्हें शनि के मार्गी होने के बाद — **दिसम्बर 2026 के बाद** — लाभ के रास्ते धीरे-धीरे खुलते दिखते हैं। और **जून 2027 के बाद जब शनि मीन से निकलेंगे**, तब ग्यारहवें भाव पर यह दबाव हटेगा और आय व अवसर दोनों में सहजता आएगी।

मुख्य बातें

- **दसवें भाव (करियर) पर तृतीय दृष्टि** — कर्म की कसौटी का समय; ईमानदार प्रयास ही टिकेगा; फरवरी 2027 के बाद राहत।
- **बारहवें भाव (मन-एकांत) पर सप्तम दृष्टि** — मन थका हुआ लग सकता है; रोज़ दस मिनट का मौन या ध्यान सबसे सरल उपाय।
- **ग्यारहवें भाव (लाभ-इच्छा) पर दशम दृष्टि** — बड़े सपने छोटे क़दमों में; दिसम्बर 2026 के बाद हल्कापन, जून 2027 के बाद स्पष्ट राहत।
- तीनों दृष्टियों में शनि एक ही बात कह रहे हैं — **धैर्य, ईमानदारी और नियम से चलना।** यह दंड नहीं, प्रशिक्षण है।
- **गोचर गुरु का चंद्र राशि से नवम में होना** इस पूरे दौर में एक बड़ा सहारा है — भरोसा रखिए।



करियर, व्यवसाय व आर्थिक प्रभाव

अ ध्या य 4

करियर, व्यवसाय व आर्थिक प्रभाव

अभय शर्मा जी, इस समय आपके करियर और धन के मामले में शनि एक बड़ी भूमिका निभा रहे हैं — यह समय न पूरी तरह कठिन है, न आसान, बल्कि यह वह दौर है जब **जो काम आपने पिछले कुछ वर्षों में लगन से किया है, वह अब धीरे-धीरे ठोस रूप लेने लगेगा।** पर इसके लिए धैर्य और एक सटीक दिशा चाहिए — वह आज की कुंडली से मैं देख रही हूँ।

करियर पर शनि का गोचर-प्रभाव — आठवें भाव की गहराई

गोचर शनि इस समय आपके जन्म-लग्न सिंह से **आठवें भाव** (मीन राशि) में हैं — और वक्री भी हैं। आठवाँ भाव अचानक बदलाव, गहरे परिवर्तन और छिपे हुए कारणों का घर है। इसका सीधा अर्थ यह है कि **करियर में कोई बड़ा एकदम दिखने वाला उछाल अभी नहीं आएगा — बल्कि भीतर से एक गहरी तैयारी हो रही है।**

दशमांश कुंडली (D10) में गुरु मकर राशि में बारहवें भाव में हैं — यह संकेत देता है कि करियर की ऊर्जा अभी बाहर नहीं, **भीतर की तरफ़ मुड़ी हुई है।** कोई नई योजना बन रही है, कोई नई दिशा सोची जा रही है — पर उसका समय अभी फलीभूत होने का नहीं है। यह समय बौने का है, काटने का नहीं।

चंद्र कुंडली से देखें तो गोचर शनि वृश्चिक लग्न (आपकी चंद्र राशि) से **पाँचवें भाव** में हैं — पाँचवाँ भाव बुद्धि, योजना और उन्नति का भाव है। यहाँ शनि का होना यह कहता है कि **आपकी सोच अभी पक रही है, और यह पकी हुई सोच ही आगे चलकर बड़ा फल देगी।**

आर्थिक स्थिति — धन व लाभ का भाव कैसा है?

धन के लिए दूसरा भाव देखें — भावेश बुध बारहवें भाव में शत्रु राशि में हैं। लाभ के लिए ग्यारहवाँ भाव देखें — वहाँ सूर्य बैठे हैं, और भावेश बुध भी बारहवें में ही हैं। **यह बताता है कि धन और लाभ का रास्ता सीधा नहीं है — थोड़ा चक्करदार है।** पर घबराइए नहीं, क्योंकि आपकी कुंडली में **हर्ष विपरीत राजयोग** है — षष्ठेश (शनि) दुःस्थान में हैं, और यह योग कठिनाई के बाद अप्रत्याशित उन्नति देता है।

इस समय **सूर्य की महादशा में शनि की अंतर्दशा** (फ़रवरी 2026 से फ़रवरी 2027) चल रही है। सूर्य आपके लग्नेश हैं और ग्यारहवें भाव में बैठे हैं — लाभ व सफलता का भाव। पर शनि अंतर्दशा में हैं जो षष्ठ भाव में स्वराशि में बैठे हैं — यह मेहनत, अनुशासन और धैर्य माँगता है। **इसका अर्थ है — कमाई होगी, पर आसानी से नहीं; जो काम करेंगे उसका फल मिलेगा, पर देर से।**

अष्टकवर्ग में दसवें भाव (करियर का भाव) के शोधित बिंदु मात्र **3** हैं — यह कम है। इसलिए इस समय करियर में बड़ी छलाँग लगाने की कोशिश से पहले नींव मज़बूत करना ज़्यादा ज़रूरी है।

शनि की दृष्टि और गोचर ग्रहों का साथ

गोचर शनि की दसवें भाव पर दृष्टि पड़ रही है (आठवें से दसवाँ — सप्तम दृष्टि)। यह सीधे **कर्म-भाव पर शनि की नज़र** है। इसका एक सकारात्मक अर्थ यह है कि **जो काम आप इस समय ईमानदारी और अनुशासन से करेंगे, उसे शनि देख रहे हैं — और शनि जो देखते हैं, उसका फल ज़रूर देते हैं।**

साथ ही गोचर में गुरु अभी कर्क राशि में हैं (2 जून 2026 से 31 अक्टूबर 2026 तक) — जन्म-लग्न से बारहवें भाव में। गुरु का बारहवें भाव में होना खर्च और विदेश-संबंध को सक्रिय करता है। **यदि आपका काम किसी विदेशी संस्था, निर्यात, या ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म से जुड़ा है, तो नवंबर 2026 के बाद जब गुरु सिंह लग्न से पहले भाव में प्रवेश करेंगे — तब एक नई शुरुआत का द्वार खुलेगा।**

बुध इस समय कन्या राशि में हैं (7 सितम्बर से 26 सितम्बर 2026), जो उनकी स्वराशि है — और वे आपके दूसरे भाव (धन, वाणी) में गोचर कर रहे हैं। यह अगले दस-बारह दिनों में **बातचीत, अनुबंध, लेखन या व्यापारिक संवाद के लिए विशेष अनुकूल समय है।** कोई पुराना लेन-देन हो, कोई प्रस्ताव देना हो — यह समय उसके लिए उपयुक्त है।

आगे का समय — कब बदलेगी तस्वीर?

फ़रवरी 2027 से सूर्य-बुध अंतर्दशा आएगी। बुध आपकी योगिनी दशा के स्वामी भी हैं (भद्रिका योगिनी)। यह दोनों का मेल बुद्धि, वाणी, व्यापार और नई योजनाओं के लिए एक नई ऊर्जा लाएगा — **फ़रवरी से दिसम्बर 2027 का समय करियर में कोई ठोस क़दम उठाने के लिए अपेक्षाकृत बेहतर रहेगा।** कोई नया प्रस्ताव आए, कोई नया काम शुरू करना हो — उस समय की प्रतीक्षा उचित है।

3 जून 2027 तक शनि मीन राशि में ही रहेंगे। उसके बाद वे मेष राशि में आएँगे जो आपके नवें भाव (भाग्य, उच्च शिक्षा, विदेश) पर होगी — यह स्थान भाग्य के लिए अधिक अनुकूल है।

मुख्य बातें

- **अभी का समय नींव का है, छल्लांग का नहीं** — आठवें भाव का वक्री शनि गहरी तैयारी माँगता है
- **दसवें भाव पर शनि की दृष्टि** बता रही है कि अनुशासित काम इस समय सबसे बड़ा निवेश है
- **सितम्बर 26 तक** — बुध के कन्या में रहते व्यापारिक संवाद, अनुबंध व प्रस्ताव के लिए अनुकूल
- **फ़रवरी 2027 से** — सूर्य-बुध अंतर्दशा में करियर में नई दिशा व ठोस क़दम के लिए बेहतर अवसर
- **जून 2027 के बाद** — शनि का नवें भाव में जाना भाग्य व विस्तार के नए अध्याय का संकेत देता है



स्वास्थ्य, परिवार व मानसिक स्थिति पर प्रभाव

अध्याय 5

स्वास्थ्य, परिवार व मानसिक स्थिति पर प्रभाव

अभय शर्मा जी, इस समय शनि का गोचर आपके जीवन के तीन सबसे अंतरंग पहलुओं को — तन, मन और घर — एक साथ छू रहा है। यह दौर न संकट है, न सब-कुछ ठीक — यह एक परीक्षा है जो भीतर से माँजती है।

शरीर पर शनि का दबाव — कहाँ ध्यान देना ज़रूरी है

गोचर शनि इस समय मीन राशि में हैं और आपके जन्म-लग्न सिंह से आठवें भाव में विराजमान हैं। आठवाँ भाव आयु, गुप्त रोग और शरीर की छुपी हुई कमज़ोरियों का भाव है। शनि यहाँ बैठकर अपनी दशम दृष्टि से आपके पाँचवें भाव पर भी नज़र रखे हुए हैं — और पाँचवाँ भाव पेट, पाचन तंत्र व मानसिक स्थिरता से जुड़ा है।

इसके साथ यह भी देखना ज़रूरी है कि आपकी जन्म-कुंडली में **चंद्रमा चौथे भाव में नीच राशि (वृश्चिक) में हैं** — और चंद्रमा मन के साथ-साथ तन की ऊर्जा का भी सूचक है। जब गोचर शनि आठवें भाव में हों और चंद्रमा पहले से कमज़ोर हों, तो थकान, नींद की अनियमितता और शरीर में भारीपन महसूस हो सकता है। यह कोई गंभीर संकेत नहीं है — पर अनदेखा भी न करें।

- **नींद का समय पक्का करना** इस समय का सबसे बड़ा स्वास्थ्य उपाय है
- **पीठ, जोड़ और हड्डियाँ** — शनि का क्षेत्र — इनका ध्यान रखें; लंबे समय बैठकर काम करते हों तो बीच-बीच में उठते रहें
- **पाचन सँभालकर रखें** — भारी भोजन व अनियमित खान-पान इस दौर में अधिक परेशान करता है

△ कोई भी शारीरिक लक्षण हो तो चिकित्सक से अवश्य मिलें — ज्योतिष संकेत देता है, निदान चिकित्सक करते हैं।

मन की स्थिति — अंदर की बात

अभय शर्मा जी, इस समय **सूर्य-शनि की अंतर्दशा** चल रही है (फ़रवरी 2026 से फ़रवरी 2027 तक)। सूर्य महादशा-स्वामी हैं और शनि अंतर-स्वामी — दोनों स्वभाव से परस्पर विरोधी हैं। सूर्य आत्मसम्मान व नेतृत्व का ग्रह है, शनि दबाव, विलंब और धैर्य का। जब दोनों एक साथ चलते हैं तो मन में यह टकराव बनता है — "मैं इससे बेहतर का हकदार हूँ, पर चीज़ें आगे नहीं बढ़ रहीं।"

आपकी चंद्र कुंडली देखें तो गुरु दसवें भाव में हैं — यह शुभ है, पर **गोचर गुरु अभी आपकी चंद्र राशि वृश्चिक से नौवें भाव में कर्क राशि में हैं**, जो मन को थोड़ी आस्था और ऊर्जा देते हैं। यह राहत की बात है — मन पूरी तरह निराश नहीं है, पर बेचैन ज़रूर है।

इस समय मन में जो उलझन है, वह कमज़ोरी नहीं — शनि की प्रक्रिया है। वह भीतर से उन बातों को सामने लाता है जिनसे हम आँखें चुराते आए हैं। इस दौर में कोई भी बड़ा भावनात्मक निर्णय जल्दबाज़ी में न लें।

परिवार और घर का वातावरण

आपके चौथे भाव में चंद्रमा नीच राशि में हैं — चौथा भाव माता, घर और आंतरिक सुख का है। गोचर शनि की सप्तम दृष्टि इस समय आपके जन्म-लग्न से दसवें भाव (वृषभ) पर पड़ रही है — जो घर के बाहर की व्यस्तता का भाव है। इस कारण **घर और काम के बीच संतुलन बनाना इस दौर में चुनौतीपूर्ण हो सकता है।**

परिवार के साथ समय बिताना इस समय ज़रूरी है — न केवल रिश्तों के लिए, बल्कि आपके अपने मन के लिए भी। चंद्र कुंडली में शनि तीसरे भाव में हैं जो भाई-बहन व निकट सम्बंधियों को दर्शाता है — इस दिशा में कोई तनाव हो तो बात करके सुलझाना बेहतर है, टाले रखना नहीं।

माता या घर की किसी बुजुर्ग स्त्री के स्वास्थ्य पर ध्यान दें — यह संकेत है, भविष्यवाणी नहीं।

मुख्य बातें

- **शनि आठवें भाव में हैं** — तन की छुपी थकान व नींद की अनियमितता पर ध्यान दें; कोई लक्षण हो तो चिकित्सक से मिलें
- **सूर्य-शनि की अंतर्दशा** मन में टकराव बनाती है — यह दौर फ़रवरी 2027 तक है, उसके बाद सूर्य-बुध अंतर्दशा में मन हल्का होगा
- **चंद्रमा नीच** होने से भावनात्मक उतार-चढ़ाव स्वाभाविक है — किसी अपने से मन की बात कहना सबसे सरल उपाय है
- घर और काम के बीच संतुलन बनाएँ — परिवार को समय देना इस दौर में मन की दवा है

• **रोज़ एक नियत समय पर उठना और सोना** — यह छोटी-सी आदत इस पूरे अध्याय का सबसे बड़ा उपाय है; चंद्र और शनि दोनों नियम से सधते हैं



आगामी शनि गोचर (अगले 2-3 वर्ष) व राशि-परिवर्तन

अ ध्या य 6

आगामी शनि गोचर (अगले 2-3 वर्ष) व राशि-परिवर्तन

अभय शर्मा जी, अगले दो-तीन वर्षों में शनि का गोचर आपके लिए एक बड़ा मोड़ लेकर आने वाला है — **जून 2027 में शनि मीन से मेष राशि में प्रवेश करेंगे**, और यह परिवर्तन आपकी कुंडली पर गहरा असर डालेगा। अभी का कठिन दौर धीरे-धीरे पीछे छूटेगा, पर नया समय अपनी अलग माँग लेकर आएगा।

अभी से जून 2027 तक — वक्री शनि का अंतिम पाठ

अभी शनि मीन राशि में वक्री हैं और **11 दिसम्बर 2026 को मार्गी होंगे**। यह वक्री काल एक तरह की भीतरी समीक्षा का समय है — शनि आपसे पूछ रहे हैं कि पिछले डेढ़-दो वर्षों में जो बोया, उसका हिसाब हो गया या नहीं। जन्म-लग्न सिंह से शनि आठवें भाव में हैं, और आठवाँ भाव गूढ़ बदलावों, छिपी चुनौतियों व पुरानी ज़िम्मेदारियों का भाव है। इस काल में जो भी अधूरा छोड़ा था — कोई रिश्ता, कोई काम, कोई भीतरी उलझन — शनि उसे सामने लाते हैं।

दिसम्बर 2026 में शनि मार्गी होने के बाद राहत की एक हल्की-सी लहर आएगी। काम में अटकी हुई चीज़ें आगे बढ़ने लगेंगी, मन का बोझ थोड़ा हल्का होगा। शनि का शोधित अष्टकवर्ग बिंदु आठवें भाव (मीन) में 5 है — न बहुत कम, न बहुत अधिक — इसलिए यह समय पूरी तरह कठिन नहीं, पर सहज भी नहीं। धैर्य ही इस काल की असली कुंजी है।

जून 2027 — शनि का मेष में प्रवेश व आपके लिए इसका अर्थ

3 जून 2027 को शनि मेष राशि में आएँगे — यह इस रिपोर्ट का सबसे महत्वपूर्ण बिंदु है। मेष आपकी कुंडली में **नवम भाव** है — भाग्य, धर्म, उच्च शिक्षा, गुरु व दूर-यात्रा का भाव। और यहाँ एक विशेष बात है जो आपकी कुंडली को और भी व्यक्तिगत बनाती है — **आपके जन्म के समय मंगल स्वयं मेष राशि में स्वराशि में विराजमान हैं**। यानी गोचर शनि उस भाव में आएँगे जहाँ आपका जन्म-मंगल बैठा है।

शनि और मंगल का यह संयोग मिश्रित फल देने वाला है। नवम भाव में शनि का आना भाग्य-चक्र को गंभीरता से घुमाता है — **यह दौर बड़े निर्णयों का होगा**। करियर में दिशा बदलने की, किसी बड़े लक्ष्य की ओर मेहनत से बढ़ने की, या किसी गुरु तुल्य व्यक्ति के सानिध्य की संभावना यहाँ बनती है। शनि नवम में धर्म व कर्म का मेल कराते हैं — जो काम आप केवल पैसे के लिए नहीं, बल्कि अर्थ के लिए

करना चाहते हैं, उसकी नींव इस काल में पड़ सकती है।

चंद्र राशि वृश्चिक से देखें तो मेष **छठा भाव** बनता है — और यहाँ शनि का आना स्वास्थ्य व दैनिक अनुशासन पर जोर देगा। **इस दौर में शरीर और दिनचर्या की अनदेखी न करें।** छठे भाव में शनि प्रयास को पुरस्कार देते हैं — जो नियमित रहे, वही आगे बढ़े।

अष्टकवर्ग में नवम भाव (मेष) के शोधित बिंदु 13 हैं — यह बहुत अच्छा बल है। इसका सीधा अर्थ यह है कि **शनि का नवम भाव में गोचर आपके लिए अपेक्षाकृत अनुकूल रहेगा**, कठिन नहीं। भाग्य का साथ मिलेगा, पर परिश्रम की शर्त पर।

2027-2029 — सूर्य महादशा व शनि गोचर का मेल

यह भी ध्यान देने योग्य है कि जब शनि मेष में आएँगे, तब आप **सूर्य महादशा** (अप्रैल 2029 तक) में होंगे। सूर्य आपके लग्नेश हैं और ग्यारहवें भाव में हैं — लाभ व इच्छापूर्ति का भाव। सूर्य का षड्बल बलपूर्ण है (9.86 रूप), हालाँकि अवस्था मृत है, इसलिए फल पूरा तो नहीं, पर नवम भाव के 13 शोधित बिंदुओं के साथ मिलकर यह समय **प्रयास को परिणाम में बदलने का** बन सकता है।

फ़रवरी 2027 से सूर्य-बुध अंतर्दशा आरंभ होगी। बुध का भाव बारहवाँ है — इसलिए यह काल थोड़ा अंतर्मुखी रहेगा, बड़े विस्तार का नहीं। पर विचार, लेखन, संवाद व छोटे व्यापारिक निर्णयों में यह समय सक्रिय रहेगा। **दिसम्बर 2027 से सूर्य-केतु अंतर्दशा** — यह आत्म-चिंतन व पुरानी चीज़ें छोड़ने का काल है। और **अप्रैल 2028 से सूर्य-शुक्र अंतर्दशा** — हालाँकि शुक्र अस्त व बारहवें भाव में हैं, इसलिए इस काल से बहुत बड़ी उम्मीद न रखें, पर सम्बंधों व जीवन में थोड़ी कोमलता ज़रूर लौटेगी।

मुख्य बातें

- **11 दिसम्बर 2026** को शनि मार्गी होंगे — अटकी हुई चीज़ें उसके बाद हल्का हिलेंगी।
- **3 जून 2027** को शनि मेष (नवम भाव) में आएँगे — यह भाग्य-भाव है और इसके शोधित बिंदु 13 हैं, यानी यह गोचर आपके लिए **अनुकूल** रहने की संभावना है।
- नवम भाव में जन्म-मंगल पहले से हैं — शनि वहाँ आने पर परिश्रम की माँग बढ़ेगी, पर फल भी मिलेगा।
- चंद्र राशि से यह छठा भाव है — **स्वास्थ्य व दिनचर्या पर ध्यान अनिवार्य होगा।**
- अगले दो वर्षों में बड़े निर्णय लेने की तैयारी अभी से शुरू करें — शनि जब नवम में आएँ, तब आप तैयार मिलें।



शनि को प्रसन्न करने के उपाय व सावधानियाँ

अ ध्या य 7

शनि को प्रसन्न करने के उपाय व सावधानियाँ

अभय शर्मा जी, शनि को मनाने की ज़रूरत नहीं — उनके साथ चलने की ज़रूरत है। जो आदमी अनुशासन से जीता है, समय का पाबंद है, और दूसरों का हक नहीं छीनता — शनि उसके लिए पहले से अनुकूल हैं।

आपकी कुंडली में शनि स्वराशि मकर में, छठे भाव में वक्री हैं — यह शनि बलवान है (षड्बल 7.5 रूप, न्यूनतम 5 से काफ़ी ऊपर), पर अवस्था कुमार है, यानी फल आधा-आधा मिलता है। इस समय गोचर शनि मीन राशि में वक्री हैं और अंतर्दशा भी शनि की चल रही है (फ़रवरी 2027 तक)। यह समय उपाय का नहीं, दिशा सँभालने का है।

पहला क़दम — शनि के अनुसार जीना

शनि का सबसे बड़ा उपाय है **समय की पाबंदी**। रोज़ एक काम तय समय पर करें — चाहे छोटा हो। सोने-जागने का समय पक्का करें। यह एक आदत शनि को आपके पक्ष में खींच लाती है।

आपके शनि छठे भाव के स्वामी और खुद छठे में बैठे हैं — इसका अर्थ है कि **सेवा, श्रम और व्यवस्था** ही आपका असली उपाय है। किसी बड़े काम को बोझ समझकर टालिए मत — उसे छोटे हिस्सों में बाँटकर रोज़ थोड़ा करते रहिए। शनि देरी करता है, पर जो टिका रहता है उसे अंत में पूरा फल देता है।

इस समय **शॉर्टकट और जल्दबाज़ी** — दोनों से बचिए। सूर्य-शनि की यह अंतर्दशा कहती है कि जो भी कमाना है, मेहनत से कमाइए — किसी और के नाम या प्रतिष्ठा के सहारे नहीं।

शरीर व दिनचर्या — यही टिकाऊ उपाय है

रोज़ शारीरिक श्रम — तेज़ चाल, योग या कोई भी व्यायाम — कम से कम बीस मिनट। शनि वायु-तत्व का ग्रह है; जब शरीर में रक्त-संचार अच्छा रहता है तो शनि के कारण होने वाली जड़ता कम होती है।

गोचर शनि इस समय आपके आठवें भाव में वक्री हैं — यह एकांत, थकान और भीतरी उलझन का समय हो सकता है। इसलिए **मन की बात किसी अपने से कहें**, भीतर मत दबाइए। केतु भी इस समय आपके लग्न में हैं — ध्यान या पाँच-दस मिनट का मौन रोज़ करें, यह केतु और शनि दोनों को एक साथ साधता है।

मंत्र व दान — एक ही, सरल

शनि बीज मंत्र — "ॐ शं शनिश्चराय नमः" — शनिवार को, सूर्यास्त के बाद, 108 बार। इसे फ़रवरी 2027 तक — यानी शनि की अंतर्दशा समाप्त होने तक — नियमित करें।

दान — शनिवार को काले तिल, सरसों का तेल, या काला कम्बल किसी ज़रूरतमंद को दें। दान बिना दिखावे का हो — यही शनि को प्रिय है।

सेवा — किसी बुजुर्ग, मज़दूर या ऐसे व्यक्ति की सचमुच मदद करें जो बदले में कुछ नहीं दे सकता। यह उपाय किसी भी मंत्र से बड़ा है।

सावधानियाँ — जो न करें

- झूठ और बेईमानी से दूर रहें — शनि की दृष्टि आठवें, बारहवें और तीसरे भाव पर है; जो गुप्त रखने की कोशिश करेंगे वह सामने आएगा।
- नशा और अनियमित दिनचर्या — इनसे शनि का कोप सबसे पहले दिखता है।
- बड़े वित्तीय जोखिम — फ़रवरी 2027 तक टालें; शनि वक्री हैं और अंतर्दशा में हैं — यह निर्णय का नहीं, धैर्य का समय है।
- रिश्तों में कटुता — विशेषकर कार्यक्षेत्र में। गोचर शनि की दृष्टि दशमांश में जटिल है — बोलने से पहले एक बार सोचें।

मुख्य बातें

- समय की पाबंदी और रोज़ का श्रम — यही शनि का सबसे बड़ा उपाय है, मंत्र से भी बड़ा
- शनिवार को "ॐ शं शनिश्चराय नमः" 108 बार — फ़रवरी 2027 तक नियमित
- किसी बुजुर्ग या ज़रूरतमंद की सेवा — बिना किसी अपेक्षा के
- शनि वक्री हैं — इस समय नई शुरुआत से अधिक पुराने कामों को पूरा करना उचित है
- डर छोड़िए — शनि दंड नहीं देते, देर करते हैं; जो टिका रहेगा उसे फल अवश्य मिलेगा

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

यस्य यश्च यदा दुःस्थः स तं यत्नेन पूजयेत् ।

एषां धात्रा वरो दत्तः पूजिताः पूजयिष्यथ ॥

जिसका जो ग्रह पीड़ित हो, वह यत्नपूर्वक उसकी उपासना करे। ब्रह्मा ने ग्रहों को वर दिया है — "पूजित होकर तुम भी पूजक का मान रखोगे।"

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय ८४

॥ ॐ शुभम् ॥

❖ ParasVani · पारस वाणी ❖ शनि गोचर रिपोर्ट ❖ अभय शर्मा (काल्पनिक) ❖

यह AI-सहायित वैदिक विश्लेषण मार्गदर्शन हेतु है — निर्णय अपने विवेक से लें।